

भोज के प्रति गम्भीर

“इसी लिए जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।”

“इसलिए, हे मेरे भाइयो, जब तुम खाने के लिए इकट्ठे होते हो, तो एक-दूसरे के लिए ठहरा करो” (1 कुरिन्थियों 11:27-33)।

हर अधिकार के साथ साथ जिम्मेदारी भी होती है। यीशु द्वारा स्थापित किए भोज में भाग लेने से बढ़कर सम्मान की बात शायद ही हम सोच सकें; और हम भोज के प्रभु और अपने ही विवेक के द्वारा प्रभु भोज को उचित ढंग से न लेने के कारण दोषी ठहराए जाने से बढ़कर विनाशकारी न्यायी की बात नहीं सोच सकते।

कुरिन्थुस के लोग सप्ताह के पहले दिन लगातार इकट्ठा होते थे, प्रत्येक सप्ताह भोज में भगा लेते और मित्रतापूर्वक और पक्की सहभागिता में बने हुए थे। परन्तु उन्होंने एक अकल्पनीय बात कर ली कि वे भोज को इसके ईश्वरीय उद्देश्य और बड़े डिजाइन को ध्यान में रखकर एथेलेने में नाकाम थे। उनके नाम अपने पत्र में पौलुस ने भोज को लेने के उनके ढंग के कारण जबर्दस्त डांट लगाई। उसने उन्हें बताया कि वे प्रभु के देह और लहू के दोषी हैं।

क्या हमारे लिए आज भोज को हल्के ढंग से और अनुचित ढंग से लेना सम्भव है? बेशक यह सवाल हर मसीही के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

त्रासदी की वास्तविकता

1 कुरिन्थियों के हवाले के प्रकाश में हमें बड़ी सकारात्मकता के साथ इस प्रश्न का उत्तर देना होगा। पौलुस ने हमारे सामने इस सच्चाई की वास्तविकता रख दी। “इसलिए जो कोई” शब्दों में उसने मेज़ पर बैठने वाले हर व्यक्ति को समेट लिया। भाग लेने वाले हर व्यक्ति को प्रभु की मृत्यु को पहचानने की जिम्मेदारी मिल गई थी। पौलुस ने कहा कि जो कोई “अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा” (1 कुरिन्थियों 11:27)। “अनुचित रीति” शब्द का अर्थ यीशु की देह और लहू को स्मरण किए बिना है और इसमें उसकी मृत्यु की उपेक्षा करना, दरुपयोग करना या हल्के से लेना शामिल है। पौलुस ने आगे कहा, “क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है” (1 कुरिन्थियों 11:29)। जब यूहन्ना बपतिस्मा

देने वाले ने प्रचार किया और लोगों ने उसके प्रचार को नकार दिया, तो उनका न्याय यूहन्ना के संदेश से हुआ। जैसे मक्खन को पिघलाने वाला सूर्य ही मिट्टी को कठोर बनाता है, वैसे ही यीशु की पृथ्वी की सेवकाई ने कुछ का तो उद्धार किया पर दूसरों का न्याय किया। प्रभु भोज को उचित रीति से लेने से हमें इस आश्वासन के साथ कि हम यीशु की इच्छा के अनुसार जी रहे हैं, आशीष मिलती है। इसे अनुचित रीति से लेने से हमें इस अहसास के साथ श्राप मिलता है कि हम अपने प्रभु की आज्ञा को तोड़ रहे हैं।

इस संदर्भ में, कुरिन्थियों के लोगों ने अपने भोज को एक-दूसरे के साथ अर्थात् अपनी संगति के खाने में मिलाकर प्रभु भोज के अपने खाने को दबाकर उसे उलझा दिया है। उनकी दिलचस्पी उद्धारकर्ता की मृत्यु के चिन्तन में भाग लेने के बजाय अपने शारीरिक भोज न खाने में अधिक हो गई थी। जो कुछ कुरिन्थियों ने किया हमें वैसा ही न करने के लिए चौकस होना आवश्यक है।

त्रासदी का न्याय

इसी आयत में हम भोज की गम्भीरता को देखते हैं। पौलुस ने कहा, “इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए” (1 कुरिन्थियों 11:28)। भोज को उचित रीति से लेने के लिए इसे खाने से पहले और खाने के दौरान हमें अपनी जांच करना आवश्यक है। इस जांच में यह प्रश्न आता है कि “क्या मैं यीशु की देह और लहू को पहचानता हूँ?”

इस कारण, भोज के दौरान कुछ लोग प्रभु की मृत्यु के बारे में उस हवाले को पढ़ते हैं ताकि उन्हें उसकी मृत्यु को स्मरण करने में अगुआई मिले। अन्य मसीही लोग परमेश्वर को उसके पुत्र के शरीर और लहू का बलिदान देने के लिए धन्यवाद करते हुए अपने पिता से प्रार्थना करना चुनते हैं। ऐसे भी हैं जो उस महान बलिदान के लिए जो उनके लिए किया गया था एक एक बात पर चिन्तन करने की कल्पना करते हुए यीशु की वास्तविक मृत्यु को अपने मनों में उतारते हैं।

पौलुस ने तर्क दिया कि बाद में जांच जाने से बेहतर यही है कि हम अपने आपको अभी जांच लें। उसने लिखा:

यदि हम अपने आप को जांचते, तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिए कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें (1 कुरिन्थियों 11:31, 32)।

सही जांच से आम तौर पर सुधार हो जाता है। सही डांट से आम तौर पर सुधार आ जाता है। मुख्य रूप में प्रभु के अनुशासन से हमें प्रभु के वचन तक लाया जाता है। हम पढ़ते हैं, हम सीखते हैं, हम मन फिराते हैं और हम बदल जाते हैं। ऐसा करते हुए हमारे पास उस अन्तिम दिन पर न्याय से डरने का कोई कारण नहीं होगा।

त्रासदी का परिणाम

पौलुस प्रभु भोज के खाने में हमारी जिम्मेदारी की वास्तविकता से प्रभु भोज की गम्भीरता और फिर इसके दुरुपयोग की त्रासदी में चला गया। उसने कहा, “इसी कारण तुम में बहुतेरे निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए” (1 कुरिन्थियों 11:30)। मसीही जीवन के केन्द्र

में यीशु की मृत्यु है। हमारा उद्धार उसकी मृत्यु के द्वारा हुआ है। हम उसके शुद्ध करने वाले लहू के द्वारा जीवित हैं; हमारी आशा की हर बात हमारे लिए उसके बलिदान से जुड़ी है। इसलिए जब कोई अपने भाइयों और बहनों के साथ मेज़ पर बैठकर उसे भक्तिपूर्ण ढंग से याद नहीं करता पाता जो यीशु ने उसके लिए किया है, तो वह अपनी त्रासद निर्बलता, रोग और अपनी आत्मा के सोए होने को ही दिखाता है। पौलुस ने “इसी कारण” वाक्यांश का इस्तेमाल किया। प्रभु भोज को सही ढंग से लिए बिना हम परमेश्वर की इच्छा के प्रति चौकस, प्रभु की इच्छाओं में समर्पित या प्रभु के प्रेम में बढ़ते नहीं रहते।

कुरिन्थियों ने भोज के मामले को हाथ से निकल जाने दिया था। वे इसमें भाग तो लेते थे पर उनका भाग लेना स्वीकार्य नहीं है। एक अर्थ में पौलुस ने उन से कहा, “तुम भोज में भाग लेने के लिए इकट्ठा तो हुए हो, पर तुम इसमें वैसे भाग नहीं लेते जैसे तुम्हें लेना चाहिए। तुम ने इससे पहले अपनी सहभागिता के भोजन को रख दिया है। तुम्हारी दिलचस्पी भोज को मनाने में उतनी नहीं जितनी खाने में है।”

सारांश

पौलुस से इस संदेश से हमें क्या सीख लेनी चाहिए? हमें भोज में उचित ढंग से भाग न लेने पाने की वास्तविकता को देखना चाहिए। हमें देखना चाहिए कि हम जब भी हम इसमें से खाते हैं अपनी जांच करनी आवश्यक है। हमें अपने आप से पूछना चाहिए, “क्या मैं प्रभु की देह और उसके लहू को याद कर रहा हूँ?” हमें पता होना चाहिए कि प्रत्येक रविवार अपने आपको इस भोज में गम्भीरतापूर्वक न दे पाने के गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। प्रभु भोज के बिना प्रभु का कोई दिन नहीं होना चाहिए; और प्रभु भोज को पूरे सम्मान, स्मरण और उस चिन्तन के साथ लिया जाना चाहिए जिसके यह योग्य है।

“यदि कोई भूखा हो, तो अपने घर में खा ले जिस से तुम्हारा इकट्ठा होना दण्ड का कारण न हो” (1 कुरिन्थियों 11:34क)।